Airo International Research Journal
Volume XIII, ISSN: 2320-3714
January, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

भारतीय नवजागरण के अग्रदूत

डॉ. ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

भारतीय नवजागरण के पुरोधाओं में ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन रॉय का योगदान स्तुत्य है | उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों बाल विवाह, सती प्रथा एवं जाति प्रथा का खुलकर विरोध किया |आधुनिक काल में केशव चंद्र सेन का मानना था कि स्त्री की स्थिति में सुधार किए बिना कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता | वे मानते थे कि हमें महिलाओं को शिक्षित कर अंधविश्वासों से बाहर निकालना होगा | ईश्वर चंद्र विद्यासागर का मानना था कि इस देश में स्त्रियां पुरुष की निर्दयता का शिकार है, उन्होंने विधवा विवाह का समर्थन किया | समाज के उत्थान के लिए वह हर विरोध का सामना करने को तत्पर थे | महात्मा ज्योतिबा फूले क्रांतिकारी समाज सुधारक थे | समाज के निम्न वर्ग के साथ घटित अमानवीय अत्याचारों को उन्होंने खुली आंखों से देखा | मानवाधिकारों की रक्षा के लिए इस महानायक के साथ पत्नी सावित्रीबाई फूले बराबर खड़ी रही | पंडित रमाबाई ऐसी ही महान विभूति थी जिन्होंने समूचे बंगाल में नवजागरण की लहर चलाई | स्वामी विवेकानंद ने लिंग भेद को भुलाकर स्त्री-पुरुष के बीच समान आचरण पर बल दिया |

भारत में सामाजिक सुधार की दिशा में केरल के सन्त श्री नारायण गुरु (1856-1928) ने स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में सुधार लाने के लिए अनेक क्रांतिकारी कदम उठाये।जब समाज अंधकार के घने कुहासे में डूबा हुआ था। बाल विवाह, बहु-विवाह प्रथा, नारी अशिक्षा तथा निम्न जाति के पुरुष एवं महिलाओं का मंदिर में प्रवेश वर्जित था। निम्न वर्ग की स्त्रियों को कपड़ा, आभूषण पहनने का अधिकार नहीं था। वे उच्च वर्ग के लोगों के समक्ष अपनी छाती को उघाड़ कर रखती थी। परिणामस्वरूप वंचित स्त्रियों उनके शोषण का शिकार बनती थी। यूं कहा जाए कि तात्कालीन समाज में नारी उन्नति के समस्त मार्ग अवरूद्ध थे। ऐसे घोर निराशामय वातावरण में श्रीनारायण गुरु ने मंदिरों में पाठशालाएं खोलकर शिक्षा की अलख जगाई। उन्होंने विद्यालयों में सहशिक्षा पर बल दिया। उनका नारा था 'संगठन से शक्तिशाली बनो और विद्या से प्रबुद्ध बनो।' श्रीनारायण स्वामी ने सन् 1903 में धर्म परिपालन योगम (एस.एन.डी.पी.) की स्थापना की। इस संगठन का मुख्य लक्ष्य 'अस्पृश्यता का निवारण, निम्न जाति के लोगों के लिए स्कूलों में प्रवेश और सरकारी सरकारी प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना था। दूसरा ईषव जैसी पिछड़ी जातियों के बीच फैले अनाचार एवं अंधविश्वासों को समाप्त करना था। इसके अतिरिक्त शिक्षा के द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति हासिल करना।' उन्होंने निम्न जातियों में संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा का प्रचार किया। उन्होंने केरल के अन्दर विवाह संस्कार की रस्म का सरलीकरण किया तथा

सुशिक्षित बनाया जा सकता है। अम्मा दूरगामी सोच रखती है। वह जानती है कि विश्व में भूख, गरीब, अन्याय एवं शोषण है। भूख अभिशाप है, गरीबी दुनियां का सबसे बड़ा शत्रु है। यदि विश्व में तीसरा युद्ध होता है तो वह गरीबी के खिलाफ होना चाहिए। विश्व में लूटपाट, उग्रवाद, स्त्रियों का शोषण और वेश्यावृत्ति की जननी गरीबी है। गरीबी शरीर को नहीं मन को भी दुर्बल बनाती है। वे स्वयं गरीब विधवाओं के लिए पेंशन की व्यवस्था कर महिला सशक्तीकरण की नीव डालती है। वह एक नये आधुनिक समाज का स्वपन लेती हैं जिसमें ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, निरर्थक धारणाओं को भुलाकर मानव प्रगति की राह खोजकर आगे बढ़े। अम्मा के अनुसार मन:स्थिति के बदलने से परिस्थिति भी बदल जाएगी। वास्तव में अम्मा ने विश्वभर में आध्यात्मिक पुनर्जागरण का अभियान चलाया जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

संदर्भ ----------

1. जी 0 गोपनाथन, क्रांति संत श्री नारायण गुरु की चुनी हुई कविताएं, वाणी प्रकाशन, 2000, पृष्ठ 25
2. वही पृष्ठ 34
3. राधाकृष्णन, महात्मा गांधी और सामाजिक न्याय, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली-11, 2001 पृष्ठ 118
4. माता अमृतानंदमयी देवी, अमृतवाणी, अक्टूबर 2004, पृष्ठ 3